आओ अभ्यास करें
Let's Do Exercise

पठन एवं लेखन अभिव्यक्ति

आपकी कलम से — Questions relating Text

श्रुतलेखन/Dictation

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए पुनः लिखिए-

मृत्युलोक	स्मरण	प्रदक्षिणा	सविशेष	उत्तरदायित्व
....	....	....	....	....
....	....	....	....	....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-
   (क) नारद विष्णु-भक्त किसान की परीक्षा क्यों लेना चाहते थे?
   (ख) तेल का पात्र लेकर विश्व की प्रदक्षिणा पूरी करने के बाद नारद के मन में उल्लास भरे होने का क्या कारण था?
   (ग) विष्णु ने नारद से क्यों कहा, "यह उत्तर तुम्हारा यहीं आ गया?" वह उत्तर क्या था?
   (घ) इस कविता का सन्देश क्या है?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ सन्दर्भ सहित लिखिए तथा यह भी बताइए कि नारद यह सुनकर लज्जित क्यों हुए-

विष्णु ने कहा, "नारद !
उस किसान का भी काम मेरा दिया हुआ है।
उत्तरदायित्व कई लादे हैं एकसाथ
सबको निभाता और काम करता हुआ
नाम भी वह लेता है
इसी से है प्रियतम।"

4. सही विकल्प पर सही का चिह्न (✓) लगाइए-
   (क) किसान ने दिन भर में भगवान का कितनी बार नाम लिया?
   (i) एक बार ☐ (ii) तीन बार ☐ (iii) अनेक बार ☐
   (ख) नारद जी ने किस चीज से भरा पात्र लेकर विश्व की प्रदक्षिणा की?
   (i) जल ☐ (ii) दूध ☐ (iii) तेल ☐
   (ग) किसान भगवान का प्रियतम क्यों था?
   (i) वह दिन-रात भगवान का स्तुति-गान करता रहता था। ☐
   (ii) वह अपना उत्तरदायित्व भली प्रकार निभाता था। ☐
   (iii) अपने दायित्वों को निभाते हुए भी वह भगवान का स्मरण कर लेता था। ☐

नारद को देखकर विष्णु भगवान ने
बैठाया स्नेह से
कहा, "यह उत्तर तुम्हारा यहीं आ गया
बतलाओ, पात्र लेकर जाते समय कितनी बार
नाम इष्ट का लिया?",
"एक बार भी नहीं",
शंकित हृदय से कहा नारद ने विष्णु से
"काम तुम्हारा हीं था
ध्यान उसी से लगा रहा
नाम फिर क्या लेता और?"
विष्णु ने कहा, "नारद
उस किसान का भी काम
मेरा दिया हुआ है।
उत्तरदायित्व कई लादे हैं एकसाथ
सबको निभाता और
काम करता हुआ
नाम भी वह लेता है
इसी से है प्रियतम।"
नारद लज्जित हुए
कहा, "यह सत्य है।"

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

विष्णु भगवान
सुनकर कौन
हुआ?

नारद चकरा गये—
किन्तु भगवान को किसान ही
यह याद आया है?

गये विष्णुलोक
बोले भगवान से
"देखा किसान को
दिनभर में तीन बार
नाम उसने लिया है।"

बोले विष्णु, "नारदजी,
आवश्यक दूसरा
एक काम आया है
तुम्हें छोड़कर कोई
और नहीं कर सकता।

साधारण विषय यह।
बाद को विवाद होगा,
तब तक यह आवश्यक कार्य पूरा कीजिए—
तेल-पूर्ण पात्र यह
लेकर प्रदक्षिणा कर आइए भूमण्डल की
ध्यान रहे सविशेष
एक बूँद भी इससे
तेल न गिरने पाये।"

लेकर चले नारदजी
आज्ञा पर धृत-लक्ष
एक बूँद तेल उस पात्र से गिरे नहीं।

योगिराज जल्द ही
विश्व-पर्यटन करके
लौटे बैकुण्ठ को
तेल एक बूँद भी उस पात्र से गिरा नहीं
उल्लास मन में भरा था
यह सोचकर तेल का रहस्य एक
अवगत होगा नया।

प्रियतम

क्या आप जानते हैं?

ईश्वर द्वारा अपेक्षित कार्य ईमानदारी से करना सबसे बड़ी पूजा है। जो लोग अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा के साथ करते हैं वे सदैव सफल होते हैं। ऐसे लोगों पर ईश्वर निरन्तर अपनी कृपा बनाए रखते हैं।

प्रस्तुत 'कविता' के माध्यम से निराला जी ने सच्ची ईश्वर-भक्ति को पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। एक किसान अपने काम को पूरी निष्ठा के साथ करते हुए पूरे दिन में केवल तीन बार ईश्वर का नाम स्मरण करता है; ईश्वर उसे अपने भक्तों में श्रेष्ठ बताते हैं। अतः अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए जो व्यक्ति प्रभु को एक बार भी हृदय से स्मरण कर लेता है, वही श्रेष्ठ है अर्थात् कर्म करना ही सच्ची भक्ति है।

एक दिन विष्णुजी के पास गये नारदजी
पूछा, "मृत्युलोक में वह कौन है पुण्यश्लोक
भक्त तुम्हारा प्रधान?"

विष्णुजी ने कहा, "एक सज्जन किसान है
प्राणों से प्रियतम।"

"उसकी परीक्षा लूँगा", हँसे विष्णु सुनकर यह,
कहा कि "ले सकते हो।"

नारदजी चल दिये
पहुँचे भक्त के यहाँ
देखा, हल जोतकर आया वह दोपहर को,
दरवाजे पहुँचकर रामजी का नाम लिया,
स्नान-भोजन करके
फिर चला गया काम पर।

शाम को आया दरवाजे, फिर नाम लिया,
प्रातःकाल चलते समय
एक बार फिर उसने
मधुर नाम स्मरण किया।
बस केवल तीन बार।'

एक दिन नारद जी किसके पास गए?

किसान दोपहर में क्या काम करके आया था?